6

राजा चन्द्रभान सिंह जूदेव की संक्षिप्त जीवनी

आपका जन्म दस नवम्बर सन् 21 को हुआ था। पिता स्वर्गीय राजा विशेश्वरसिंह जूदेव की युवावस्था में ही सन् 22 में आकस्मिक मृत्यु हो गई। अतः इनके लालन पालन शिक्षा-दीक्षा एवं सुरक्षा का गम्भीर एवं दुरूह कार्य राजमाता रानी राम दुलारी कुँवर पर पड़ा। राजमाता जी 21 अगस्त, सन् 1981 को स्वर्गवासी हुईं। भगवान उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे। उस समय आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। इसके अतिरिक्ति राजा साहब के परिवार के लोग राजमाता जी को असहाय, अबला एवं अनुभवहीन समझकर उत्पीड़ित करते रहते थे। राजमाता जी पर्दानशीं महिला थीं। जो कुछ था उसे भी ये तथाकथित परिवारी जन नर पिशाच लूट लेना चाहते थे। उसी समय ईश्वर प्रेरित एक रिस्तेदार ठा० शिवराज सिंह जी राजा साहब की मदद के लिए आए। राजमाता जी ने अपूर्ण साहस धैर्य व कुशलता के साथ पारिवारिक विरोधियों का 15-16 वर्षों तक सामना किया न केवल सामना किया वरन पराजित किया। ये निर्लज्य परिवारी जन कभी सामूहिक रूप से तो कभी पृथक-पृथक एक अबला एवं एक बालक पर प्रहार करते रहे। परन्तु भगवान अर्गलेश्वर महादेव की कृपा से जिले का अधिकारी वर्ग राजा साहब का सहयोगी एवं शुभचिंतक बन गया। ठा० शिवराज सिंह ने भी अपना जीवन राजा साहब के लिए समर्पित कर दिया। वे पीर, बावर्ची, भिस्ती, खर बन गए। जब राजा साहब ४-4 वर्ष के हो गए तो राजमाता जी ने जिले के अधिकारियों से कहलाकर गाँव में एक प्राइमरी पाठशाला खुलवाई। और इस प्रकार राजा साहब का विद्याध्ययन प्रारम्भ हुआ। परन्तु श्री श्यामसुन्दर लाल दर. आई. सी. एस. कलेक्टर फतेहपुर आ गये। दर साहब ने इस बात पर बल दिया कि राजा साहब की शिक्षा फतेहपुर में होनी चाहिए। राजमाता जी ने ठा० शिवराज सिंह के द्वारा दर साहब को कहलाया कि आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि पूरा परिवार फतेहपुर में रह

कर शिक्षा दिला सके और राजा साहब की उम्र इतनी कम है कि अकेला छोड़ा नहीं जा सकता था। जिलाधीश दर साहब ने इस बात को महसूस किया। फतेहपुर में गौतम राजपूत बड़ी संख्या में हैं। और उनमें से कुछ जैसे खोटिला, गभरी, दुगरेई, बहुआ, तेलियानी आदि के गौतम आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न थे परन्तु कोई भी राजा साहब की मदद को आगे नहीं आया। अधिकारियों की सहानुभूति एवं मदद से राजा साहब और उनकी बड़ी बहन का फतेहपुर में परिवार के साथ रहकर शिक्षा प्राप्त करना सम्भव हो सका।

फतेहपुर में राजा साहब को गवरमेण्ट हाई स्कूल में एवं राजकुमारी जी को गवरमेण्ट गर्ल्स स्कूल में दाखिल कराया गया कालांतर में राजकुमारी जी का विवाह पारना स्टेट [जनपद आगरा] के दीवान साहब श्री गोकर्ण सिंह भदौरिया के लघुभ्राता तथा राय बहादुर ठा० थम्मन सिंह भदौरिया कलेक्टर के भतीजे तथा दत्तक पुत्र श्री यतेन्द्र सिंह के साथ सम्पन्न हुआ। दीवान का खिताब इस वंश को मुगल काल में मिला था। राजमाता जी जब इन बच्चों को लेकर फतेहपुर रहने लगीं तो गृह-प्रबन्धक के लिए एक दूर के रिस्तेदार ठा० शिवरतन सिंह गौतम [शीशूपुर नौगवाँ निवासी जनपद कानपुर] को बुलाकर अर्गल में रखा। ठा० शिवरतन सिंह बहुत ही ईमानदार, सीधे-साधे ग्रामीण थे। उन्होंने अनेक वर्षों तक अर्गल में रहकर बड़ी ईमानदारी और निष्ठा के साथ अपने कर्तव्य का पालन किया। राजा साहब के तथा कथित परिवारी जनों ने उन्हें भी बहुत उत्पीड़ित किया और बरगलाया ताकि वे अर्गल से चले जाएँ और लूट-खसोट का मौका मिले। राजमाताजी ने आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए खुदकास्त पर्याप्त मात्रा में बढ़ाई यद्यपि भूमि असमतल व खराब थी।

राजा साहब के कक्षा आठ पास कर लेने पर राजमाता जी अर्गल वापस लौट आईं। राजा साहब को गवरमेण्ट हाई स्कूल के बोर्डिंग हाउस में रखा गया। फतेहपुर से हाई स्कूल पास करने के पश्चात वे आगरा चले गए। आगरा में बलवन्त राजपूत कालेज में दाखिला लिया। उसी बीच में डी० वाले नाम के एक अंग्रेज कलेक्टर फतेहपुर में आए जैसा कि सभी जिलाधिकारी व कर्मचारी राजा साहब से सहानुभूति रखते थे. डी वाले राजा साहब के प्रति विशेष सहानुभूति प्रकट की। डी. वाले ने राजा साहब को फौजी ट्रेनिंग प्राप्त करने हेतु सेकेण्ड लेफ्टीनेण्ट के पद पर प्रदेश सरकार की तरफ से भेजा। यह द्वितीय विश्व युद्ध का समय था। अर्गल की गौतमों की गद्दी के एक मात्र वारिस व राजमाता के एकलौते पुत्र थे। राजमाता जी ने अनिक्षा से ही भेजा। कुछ समय उपरांत एक अंग्रेज से विवाद हो जाने पर

वे वापस घर लौट आए। अर्गल लौटने पर कास्त आदि का कार्य देखने लगे। राजमाता जी बड़ी अनुभवी महिला थीं। उन्होंने अपने पुत्र के चरित्र पर विशेष ध्यान दिया था। उन्हें एक चरित्रवान व उदार व्यक्ति बनाया। सन् 1947 के जून माह में चन्द्रभान सिंह जूदेव का विवाह सिसौदिया कुल में जन्मी श्रीमती विजयश्री कुंवर के साथ सम्पन्न हुआ। एटा जनपद में सरायनीमनाम का एक प्रसिद्ध गाँव है। वहाँ पर सिसोदिया वंश के तीन भाइयों के प्रतिष्ठित व सम्पन्न परिवार हैं जो कि बड़ी गढ़ी मझली गढ़ी एवं छोटी गढ़ी के नाम से प्रसिद्ध हैं। राजा साहब का विवाह मझली गढ़ी के स्वर्गीय कुँवर नौनिहाल सिंह की बहन से सम्पन्न हुआ। सन 1947 में अपना देश भी स्वतंत्र हुआ।

धीरे-धीरे समय बीतता गया और सन् बावन आ गया। सन् 52 में स्वाधीनता के बाद प्रथम बार विधान सभाओं के चुनाव कराए जा रहे थे। राजा साहब के मित्रों, विरादरी के लोगों तथा कथित खानदानियों ने राजा साहब का चुनाव में भाग लेने के लिए उत्साहित किया। चुनाव में भाग लेने के लिए उस परिवार के लोगों ने विशेष दबाव डाला जिसके पूर्वजों ने राजा गनपत सिंह और ठा० जोधासिंह के साथ एवं देश के साथ सन् 1857 में गद्दारी करके पकड़वा दिया था। और अंग्रेजों का खैरख्वाह बन गया था। अमर शहीद ठा० जोधासिंह गौतम अपने इक्यावन साथियों सहित खजुहा के निकट बावनी इमली पर देश की स्वतंत्रता के लिए झूल गए इस घटना का विवरण पिछले पृष्ठों में देखें। अस्तु, राजा साहब ने नामांकन पत्र निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में भरा। नामाँकन पत्र वापस लेने की तिथि निकल जाने के तुरन्त बाद यह परिवार उनके विरुद्ध प्रचार में जुट गया यद्यपि इन जन्मजात दगाबाजों के विरोध का कोई असर नहीं पड़ा क्योंकि राजा साहब के प्रति जनता में सम्मान व स्नेह था। क्षेत्र के समस्त राजपूत भाइयों ने तथा अन्य वर्ग के लोगों ने राजा साहब का समर्थन किया। काँग्रेस नेता व अन्य प्रत्याशी पूर्णतः हताश थे। सभी ने राजा साहब की जीत मान ली थी। उन दिनों तहसील मुख्यालय रकजुहा में था। वहीं पर मत पेटिकायें एकत्र की गई थीं। मतगणना के दिन सर्व प्रथम चाँदपुर पोलिंग स्टेशन की मत पेटिकायें खोलकर मत गणना प्रारम्भ की गई। काँग्रेस को केवल साठ मत मिले जबकि राजा साहब को छै सौ के लगभग मत प्राप्त हुए। श्री गुलाम एजदानी उस समय हाकिम परगना थे। उन्होंने मत गणना रुकवा दी। ठा० लालबहादुर सिंह तहसीलदार थे उन्हें अवकाश पर भेज दिया गया। कई दिन पश्चात जब पुनः मतगणना प्रारम्भ हुई तो प्रत्येक पोलिंग स्टेशन पर काँग्रेस का प्रत्याशी ही जीता। इस प्रकार राजा साहब की जीत को हार में

परिणत कर दिया गया। इसके पश्चात् सार्वजनिक सेवा के अनेक छोटे-छोटे पदों पर रहकर जनता की सेवा करते रहे। दस वर्षों तक अमौली ब्लाक के ब्लाक प्रमुख रहे। लगभग नौ वर्षों तक जिला सहकारी बैंक के संचालक रहे। उत्तर प्रदेश राज्य सहकारी मिल्क बोर्ड कानपुर के चेयरमैन रहे। इधर लगभग बारह वर्षों से उ० प्र० रा० स० भूमि विकास बैंक की बिंदकी शाखा के अध्यक्ष हैं। राजा साहब के दो पुत्र हुए। जगदीश्वर की महिमा अपार है दोनों पुत्र असमय में ही नहीं रहे। उनके तीन पुत्रियाँ हैं जिनकी शादियाँ हो चुकी हैं। खानदानियों के कुचक्रों एवं ग्रामीण जीवन की असुविधायें और असुरक्षा के कारण वे अब कानपुर में रहकर क्षत्रिय समाज की सेवा में संलग्न हैं। क्षत्रिय सभा कानपुर नगर व देहात के वे अध्यक्ष हैं। तीस अप्रैल, सन् 1984 को उनकी पत्नी श्रीमती रानी विजय कुँवर का हृदय की गति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। परमात्मा उनकी आत्मा को शाँति प्रदान करे। वे सहृदय, पति परायणा एवं सहिष्णु महिला रत्न थीं। कानपुर में राजा साहब का पता इस प्रकार है–(राजा) चन्द्रभान सिंह जूदेव [अर्गल] 200 ए ब्लाक 'एन' किदवई नगर कानपुर–11।

7
राजमाता अर्गल

राजमाता रानी रामदुलारी कुँवर इक्कीस अगस्त सन् इक्यासी को दिवंगत हो गई थीं। राष्ट्रीय कवि श्री बद्रीप्रसाद जी आर्य द्वारा अर्पित श्रद्धांजलि–

जिस अर्गल ने अन्यायी की शेखी धूल किया है।
अवध नवाब इमामी के मद को निर्मूल किया है॥
ब्रिट्रिश काल में भी अर्गल की आन न घटने पाई।
जिसके कुलदीपों ने सत्तावन में फाँसी पाई॥
राजा धीर पुनीरदेव का साका सर्व विदित है।
वीर अटैया जोधासिंह से कौन नहीं परिचित है ?
बावन वीरों सहित देश हित अपने को झूले थे।
जो बावनी इमली में फाँसी का झूला झूले थे॥
नहीं किसी से उत्पीड़न के द्वारा अर्थ कमाया।
नहीं किसी से अंजाने में बेगार कराया॥
किया मान मर्दन रिपुओं को घुसने न दिया हद में।
जो नित तपता रहा शौर्य का तेज लिए जनपद में॥
सुकवि आर्य जब जब गाता अर्गल की गौरव गाथा।
जाती छाती फूल, गर्व से उन्नत होता माथा॥
कवि के नगर बिंदकी पर भी जिसकी कृपा रही है।
नित गौरव के साथ फर्ज जो अपना निभा रही है॥
रहा सतर्क राज्य रक्षण हित, किन्तु हृदय निर्मल है।
जिला फतेहपुर का प्रसिद्ध, यह राज्य अमर अर्गल है॥
अभी तलक अर्गल स्वराज्य की, जो धात्री धाता थी।
सती साध्वी सरल साहसी, सौम्य राजमाता थी॥
थीं धरती सी धैर्यवती, जो तप की पावन प्रतिमा।
रहीं पुत्रवत, प्रजा, राज्य की धूमिल हुई न गरिमा॥



स्वर्गीय राजमाता श्रीमती रानी रामदुलारी कुँवर
(२१-८-८१ को दिवंगत हुईं)

अर्गल राज्य न हुआ अनर्गल, जिनके अनुशासन से।
उड़ता रहा कीर्ति यश का नित, सौरभ सिंहासन से ॥
श्री अवनीश विशेश्वर सिंह की, जो सुयोग्य रानी थी।
महाराज की मंत्राणी, प्रिय महिषी महरानी थी ॥
राम दुलारी कुँवर, नाम से जो विख्यात रही हैं।
सदा स्वधर्म सात्विकता, संयम से स्नात रही हैं ॥
एक वर्ष का पुत्र छोड़ करके जिनके आँचल में।
राजा जी हो गए दिवंगत, रवि से अस्ताचल में ॥
तब से वह कठोर व्रत पालन, में संलग्न रही थीं।
परमपिता की भक्ति भावना, में नित मग्न रहीं थीं ॥
राजकुमार समर्थ हुए जब, तरुणाई में आये।
श्रीयुत चंद्रभान सिंह अर्गल, के राजा कहलाये ॥
उनका भी व्यक्तित्व निराला, अपना अलग रहा है।
मधुर स्वभाव मिष्ट मित, भावी सहृदय सर्वविदित है।
जनपद ही क्या ? जिनसे सारे राष्ट्रपुरुष परिचित हैं ॥
उनकी आज वीर माता का, निधन अचानक सुनकर।
वातावरण क्षुब्ध है सारा, गुंजित है दुख का स्वर ॥
जो इक्कीस अगस्त इक्यासी में, सुरलोक सिधारीं।
प्राप्त किया अमरत्व, मृत्यु भय से जो कभी न हारीं ॥
अर्गल राज्य, निधन से जिनके, आज अश्रुपूरित है।
सारा गौतम वंश आज दुःख, करुणा से विगलित है ॥
मृतात्मा की शान्ति हेतु, ईश्वर से अनुनय करते।
श्रद्धांजलि दे उन्हें भाव से, हम धीरज को वरतें ॥
धाक न कम हो कभी वीर, क्षत्रिय इस गौतम दल की।
जलती रहे ज्योति बनकर, नित अमर कीर्ति अर्गल की ॥

[मित्रवर श्री भद्रसेन जी गुप्त सर्राफ बिंदकी के सौजन्य से।]

8

रानी विजय कुँवर

स्वर्गीया रानी विजय कुँवर पत्नी राजा चन्द्रभान सिंह जूदेव सन् 30 अप्रैल 1984 को स्वर्गवासी हुईं) के प्रति श्रद्धांजलि।

सत्य प्रेम का जिसके तन पर
उज्ज्वल वसन मनोरम।
त्याग तथा उदारता जिसके,
आभूषण थे अनुपम ॥
सेवा भाव उजागर धन था,
आत्म भाव का सञ्चय।
तन से धवल, समुज्ज्वल मन से,
वाङ् मधुर मंगलमय ॥
'चंद्रभानु' की आभा अविरल,
और शौर्य- अवलम्बन।
पा सौभाग्य सुमन विकसित नित,
रहा सौम्य प्रमुदित मन ॥
हुई उदित 'मिथिलेश कुमारी',
'पुष्पा' - श्री 'शरमिष्ठा'।
तरुण त्रिवेणी सी लहराई,
पावन प्रचुर प्रतिष्ठा ॥
प्रेममयी माँ तुल्य सदा ही,
पुण्य 'प्रभा' को पाला।
पूरित रहा अधर तक मधुमय,
स्नेह 'सुधा' का प्याला ॥
पंच ज्योति बन जली निरंतर
जो जीवन के पथ पर।
शाँत भाव से चली बैठ जो,
दृढ़ साहस के रथ पर ॥



स्वर्गीया रानी श्रीमती विजय कुँवर
पत्नी राजा चन्द्रभान सिंह जूदेव
३०-४-८४ को स्वर्ग वासी हुई।

सीसौदिया- पयोधि - निर्गता
श्री, वर विजय कुमारी।
पूर्ण काम हो स्वर्ग विजय की,
यात्रा अमर तुम्हारी ॥

कर्मों का फल भोग मनुज ने
अपना स्वयं-रचा है।
नियति चक्र में फँसकर कोई,
मानव नहीं बचा है॥

देकर पुण्य ले गया जिसको
छीन सुदूर विधाता।
तुमने छोड़ दिया इस जग को,
जोड़ स्वर्ग से नाता ॥

पुर-जनगण में परिजन-मन में
बहु वन्दित बहु चर्चित।
श्रद्धामयी तुम्हें श्रद्धा से,
श्रद्धा सुमन सर्मापित ॥

तीन बहुमुखी किरणें जिसकी,
ज्योतिर्मान ललाम।
अस्तंगत उस दीपशिखा को,
शत-शत बार प्रणाम ॥

□ डॉ० अखिलेशकुमार सिंह चौहान

9

अर्गल की वीर रानी अंगारमती

(१)

वंश वीरवर अभयसिंह से हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो अर्गल वाली रानी थी ॥
राजा चन्द्रभानु अर्गल के, चन्द्रभानु की ज्योति लिये।
हुए अवतरित गौतम कुल में इतिहासों की कीर्ति लिये ॥
कालचक्र की गहन गती पर हमें नहीं पछताना है।
कुछ साहित्य विकल्प रूप में चिह्न छोड़कर जाना है ॥
नाम अमर की परिपाटी तो अपनी यही पुरानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो अर्गल वाली रानी थी ॥

(२)

कुछ संस्मरण समर्पित कर हम निज कर्तव्य निभाते हैं,
अर्गल वाली रानी की, कुछ कुछ गाथा बतलाते हैं ॥
रानी ने जो धर्म धारणा भारत भर में फैलाई,
गौतम धर्म उसे हम कहते आत्म ज्ञान की प्रभुताई ॥
देह नहीं हूँ मैं आत्मा हूँ रानी ने यह ठानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो अर्गल वाली रानी थी ॥

(३)

ब्रह्मा के सुत हुए अंगिरा उनके सुत उतथ्य आये।
मेधातिथि हुए उनके सुत गौतम सुत उनने पाये ॥
सतानन्द उनके सुत ने ही जनकपुरी में वास किया।
त्रेता का यह प्रथम चरण था सतानन्द ने जन्म लिया ॥
इसी पुण्य कुल की भारत में अर्गल एक निशानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो अर्गल वाली रानी थी ॥

(४)

गोकर्णी के तट पर गौतम ऋषि ने ही था यज्ञ किया ।
चौहानों परिहारों को था इसी यज्ञ ने जन्म दिया ।।
इसी यज्ञ से सोलंकी परमार वंश थे प्रकट हुए ।
आदि वंश गौतम कुल के इतिहास पुण्य से भरे हुए ।।
सभी युगों में गौतम कुल की कीर्ति ध्वजा फहरानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो अर्गल वाली रानी थी ।।

(५)

इसी वंश के श्रृंगी ऋषि को दशरथ ने था अपनाया ।
इनके पुत्र यज्ञ के द्वारा रामचन्द्र सम सुत पाया ।।
इसी वंश के कृपाचार्य को कुरुक्षेत्र ने जाना था ।
इनकी अमर कहानी को इतिहासों ने पहचाना था ।।
इसी वंश के नचिकेता थे जिनकी ख्याति बखानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो अर्गल वाली रानी थी ।।

(६)

गौतम बुद्ध इसी कुल के थे जिनका यश जग में छाया ।
हिंसा की प्रतिक्रिया अहिंसा यह मानव को समझाया ।।
हिंसक क्षात्र धर्म का प्रतिफल बौद्ध धर्म को अपनाये ।
देश विदेशों के प्राणी में नूतन परिवर्तन लाये ।।
बौद्ध धर्म की धारा से ही पृथ्वी तृप्त करानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो अर्गल वाली रानी थी ।।

(७)

इसी वंश के अंगदेव ने अर्गल ग्राम बसाया था ।
फतेहपुर जनपद का गौरव इससे ही बढ़ पाया था ।।
रिन्द नदी के पावन तट पर अब भी अर्गल बसा हुआ ।
कालचक्र की गतिविधियों में राजवंश है फँसा हुआ ।।
इसी वंश से प्रबल प्रेरणा क्षात्र धर्म को पानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो अर्गल वाली रानी थी ।।

(८)

शाहसुजा औरंगजेब ने खजुहा में रण ठाना था ।
औरंगजेब न्याय पथ तज़कर गद्दी में दीवाना था ।।

अर्गल की अगुवाकारी में फतेहपुर जनपद जागा।
गोरिल्ला युद्धों का फिर से जनपद में तांता लागा॥
इन युद्धों में अंगरेजों की थकित हुई मनमानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो अर्गल वाली रानी थी॥

(१८)

कौन भूल सकता जोधा को जो युद्धों का हामी था।
महाराज अर्गल की आज्ञा का पूरा अनुगामी था॥
अंगरेजों के छक्के छूटे, रहे नाम से घबराते।
ऐसे ही बलिदानों के बल आजादी हम हैं पाते॥
जेलों में छिपने वालों की तथा कथित कुर्बानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो अर्गल वाली रानी थी॥

(१९)

वीर विशम्भर देव बने थे जब गद्दी के अधिकारी।
अपने पर्वत देव बन्धु को दी जागीर एक न्यारी॥
अट्ठाइस गाँवों को लेकर गाँव गलाथा में आये।
उनके वंशज ग्राम पधारा में घनशूर राय आये॥
दिया खिताब अटैया उनको शूर वीरता सानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो अर्गल वाली रानी थी॥

(२०)

गयाबक्स सिंह ग्राम पधारा के सिरमौर पुराने थे।
उनके भाई वैजनाथ सिंह गौतम कुल के माने थे॥
उनके सुत हैं रामसिंह जो कविता करने वाले हैं।
चार पुत्र उनके पीछे नाम चलाने वाले हैं॥
गयाबक्स सिंह के सुत हीरा को संतान न पानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो अर्गल वाली रानी थी॥

(२१)

कवि को उनकी संतानों को राजवंश शुभ भाता हैं।
महाराज अर्गल से अब भी जुड़ा पुराना नाता है॥
परिवर्तन की कला प्रकृति की अपनी कला दिखायेगी।
पर वंशों की गौरव गरिमा कभी नहीं मिट पायेगी॥

इतिहासों के निर्माणों की इनमें भरी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो अर्गल वाली रानी थी॥

(२२)

राजा मानदेव के भाई ने राना पद पाया था।
साठ ग्राम लेकर चिल्ली में अपना वतन बनाया था॥
गोभा में भी इसी भाँति था राजवंश का निर्माता।
पर अब यह वीरान पड़ा है वहाँ नहीं कुछ मिल पाता॥
विविध जिलों में गौतम जाति इसी भाँति फैलानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो अर्गल वाली रानी थी॥

(२३)

इंद्रजीत राजा ने घोरहा में घोड़साल बनाई थी।
कुँवरपूर में गंगदेव ने अपनी गढ़ी सजाई थी॥
राजा धीरभान के भाई ने गुनीर बसवाई थी।
मूलराज ने गौतम कुल की वंशावली लिखाई थी॥
राजा अर्गल की प्रतिभायें दूर देश तक जानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो अर्गल वाली रानी थी॥

(२४)

अन्तिम राजा चन्द्रभानु सिंह कानपुर के हैं वासी।
गौतम वंश देश में जागे इसके हैं वे अभिलाषी॥
कैसे अर्गल नाम चले यह भी उनकी अभिलाषा है।
रानी रामदुलारी माँ की आत्मा को भी आशा है॥
वह अर्गल का महल छोड़ने में अन्दर से बिलखानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो अर्गल वाली रानी थी॥

(२५)

देह नहीं मैं आत्मा हूँ यह जीवन संग्राम बने।
इसको आत्मसात कर प्राणी युग का नया वितान तने॥
अर्गल की रानी की वाणी कल्याणी भय हारी हो।
भारत माँ की सारे जग में तब तो जय जयकारी हो॥
कवि के उद्‌गारों की प्रेरक वीणा पाणि भवानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो अर्गल वाली रानी थी॥

मैदान में तू छीन ले गौतम की जो तलवार,
तलवों में तेरे आँख मलू मैं सहसवार।
जब तक मेरे खवाबिंद के हैं हाथ में तलवार,
वीरत्व का है जिसके मेरे दिल में अहंकार।
उस वीर का वीरत्व ही है मेरा मददगार,
तब तक न चलै मुझपे तेरा कोई कुटिलवार।
दे छोड़ मेरा रास्ता मैं धाम को जाऊँ,
मंजूर न हो यह तो करामात दिखाऊँ।
गौतम की विकट मार से था खा ही चुका हार,
अब उसकी पत्नी से मिली जो जोर की फटकार।
नव्वाब के चित्त फिर न रहा क्रोध का कुछ पार,
इक बारगी कहने लगा जोर से ललकार।
ऐ वीरों, इसे आज इसी ठौर पकड़ लो,
हर बाँदी को जंजारों से मजबूत जकड़ दो।

सुनते ही यवन सैन्य हर एक ओर से धाई,
बस धाओ, धरो, पकड़ो ये आवाज थी छाई।
यह सुनते ही क्षत्राणी भी कुछ क्रोध में आई,
इक टीले में चढ़ जोर से आवाज लगाई।
सुनते ही जिससे गूँज उठा गंग किनारा,
क्षत्रित्व के नस-नस में बही खून की धारा।

हे विश्नुपदी मातु तेरे तीर पै आकर,
क्या जीवेगी क्षत्राणी भी धर्म गवांकर।
क्या सो ही गये भूत पती भंग चढ़ाकर,
दासी को भुला ही दिया बात बढ़ाकर।
क्या बूँद भी क्षत्री के रक्त की नहीं इस ठौर,
हे नाथ मेरा दोष है क्या कुछ तो करो गौर।

बूढ़ा हो रक्त ही न हो इक बूँद बदन में,
बच्चा हो दिये मुख भी हो क्षत्राणी के थन में।
क्षत्राणी की इज्जत को बचाने के लिए आज,
उठ दौड़े न सुनते ही बचन उस पै गिरै गाज।

गोरी तो हो, पर काली बनी बांदियों इस ठौर,
और चित में कुछ मेरे नमक का भी करो गौर।

नव्वाब का भी देख लो बदला हुआ तौर,
ऐरा करो हो जाय अभी और का कुछ और।
नारित्व को अब फेंक के कालित्व को धारो,
मालिक के नमक बल से यवन सैन्य संहारो।

लो ध्यान लगा सुन लो मेरे बाल सिपाही,
गौतम के लगा चाहिती है जो मुख पै सियाही।
माता की तरह मैंने निजबान निबाही,
आने नहीं दी तुम पै कभी कोई तबाही।

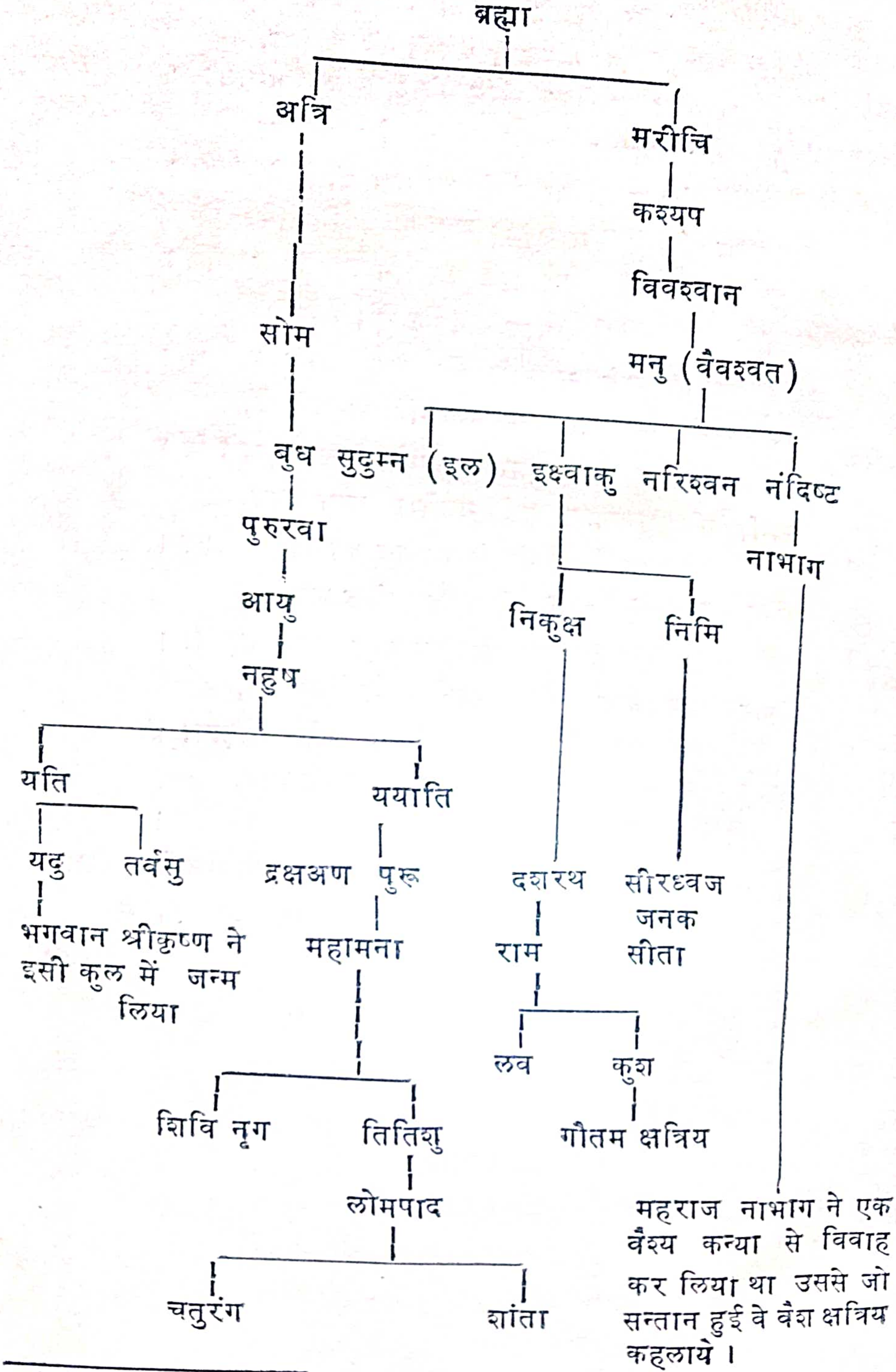
तुम पर से बहाई है अतुल दूध की धारा,
बस सोच लो इस वख्त क्या है धर्म तुम्हारा।
बस अन्य पुरुष ने जो इधर हाथ बढ़ाया,
और हो गया जड़ से ही उधर उसका सफाया।
सुनते ही बचन बाल युगल सामने आये,
हो भैंरों बटुक जैसे युगल रूप बनाये।
कर जोड़ युगल रानी के पद शीश नवाये,
ललकार कर के वीरत्व भरे बैन सुनाये।
क्या ताब है यवनेश की यों जीते हमारे,
छू पावे कहीं अंग की छाया को तुम्हारे।

लो घोड़े पे चढ़ बैठो चलो संग हमारे,
हम करते हुए चलते हैं यवनों को किनारे।
मैं आगे चलूँ भाई चलै पीछे तुम्हारे,
तुम मध्य में रहकर चलो पर धीर को धारे।
जै कालिका कहती हुई बांदी चली हर ओर,
जो सामने आ जाय करैं घात महा घोर।
यों कहके अभयचन्द ने घोड़े को बढ़ाया,
रानी वे भी निज अश्व को पीछे ही लगाया।
तब पीछे से निर्भय ने भी निज अश्व उठाया,
अर्गल का लिया रास्ता पर दिल था सवाया।
जो सामने आ जावेगा धर देंगे धुनकर,
छोड़ेंगे तो बैरी के विनयवाद को सुनकर।
माता जो मेरी सत्य हो क्षत्री को छिया है,
क्षत्री के रक्त से ही मुझे जन्म दिया है।

है नाम अभयचन्द्र किसी से नहीं डरता,
यवनेश की सेना को अभी तो हूँ कतरता।
यों कहते हुए म्यान से तलवार निकाली,
दाहन ने दुहाई दी तो सकुचा गई काली।
बिजली ने चकाचौंध से निज आँख छिपा ली,
चकरा के गिरी चिल्ली तो सुरपति ने सभाली।
अब देख अभयचन्द्र की तलवार की चमकन,
दिगनाथ उठे काँप दबी शान्ति की दमकन।
नव्वाब ने ललकार के सेना को पुकारा,
दो सिंह के शावक हैं छिनाते मेरा चारा।
क्या सूझ नहीं पड़ता है क्या धर्म तुम्हारा,
खा-खा के नमक वक्त पै करते हो किनारा।
धर बांधों इन्हें या तो ठिकाने ही लगा दो,
रानी को पकड़ बांदियों को दूर भगा दो।
सुन ऐसे वचन बीर यवन सामने आये,
फौरन ही अभयचन्द्र ने दो चार गिराये।
दस पाँच को उन बांदियों ने मार गिराया,
फिर आगे बढ़े, करते हुए पथ का सफाया।
आगे से जो आता तो अभय सामने लेता,
हर वार का उत्तर भी भली भाँति से देता।
जिस वीर पर करता था झपट वार अचेता,
धड़ धरती की ओर प्राण यम धाम को सेता।
बढ़ते ही चले जाते थे लड़ते भी थे डटकर,
मिलते समय दूर निकल जाते झपट कर।
पीछे से यवन कोई अगर घात में आता,
निर्भय उसे घनघोर समर करके छकाता।
उस वक्त अभयचन्द्र कदम आगे बढ़ाता,
निर्भय भी समय पाके वहीं आन तुलाता।
हर दोनों तरफ बांदियाँ करती थीं विकट मार,
घनघोर समर भूमि में शीशों की थी बौछार।
इस भाँति बक्सर से निकल गये छः कोस के अनुमान,
इतने में ही गौतम की कुछ सैन्य मिली आन।

यों पाके मदद रानी ने चिल्ला के सुनाया,
निर्भय व अभय ने ही मेरा धर्म बचाया।
गौतम की विकट सैन्य ने यवनों को दबाया,
नव्वाब सहित सैन्य को अति दूर भगाया ॥
अर्गल की तरफ रानी ने तब पैर बढ़ाया,
निर्भय व अभय दोनों का यश वीरों ने गाया।
है धन्य वही वीर जो कुछ करके दिखावे,
मालिक के लिए प्राण का भय मन में न लावे।
निर्भय के कई घाव विकट ऐसे लगे थे,
मानो बड़े यमराज के लघु बन्धु सगे थे।
पर रानी की रक्षा के उपायों में पगे थे,
इस हेतु से न प्राण उसके तन से भगे थे।
रानी जी सुरक्षित हुईं यवनेश गया भाग,
यह जान के प्राणों ने भी तन को दिया त्याग।
निर्भय के लिये रानी ने अति शोक मनाया,
और उसकी सुमाता का बड़ा मान बढ़ाया।
फिर अभयचन्द्र को छाती से लगाया,
मुख चूम के फिर आंचल भी ओढ़ाया।
निर्भय को नमस्कार है कवि दीन का सौ बार,
और वीर अभयचन्द्र को शावास की बौछार।

स्वर्गीय लाला भगवानदीन 'दीन'
'वीर पञ्चरत्न' से



श्री प्रतापसिंह सेंगर द्वारा लिखित 'सेंगरों का इतिहास' के आधार पर ।

शकुन्तला के पति दुष्यन्त, भरत, करु, शान्तनु, भीष्म, पाण्डु, कौरव आदि पुरु वंशी थे। आज कल इनके वंशजों को तोमर कहते हैं। राजा लोभपाद राजा दशरथ के समकालीन थे। कोशलाधीश दशरथ के शान्ता नाम की एक कन्या थी जिसे लोभपाद ने गोद ले लिया था वयस्क होने पर उसका विवाह श्रृंगी ऋषि से हुआ। आगे चलकर इनके वंशज सेंगर क्षत्रिय कहलाये। वस्तुतः अंगिरा, उतथ्य, मेघातिथ, गौतम, श्रृंगी ऋषि आदि क्षत्रिय परम्परा में हैं। बम्बई के खेमराज वेंकटेश्वर प्रेस ने सूर्यवंश का वंश-वृक्ष मुद्रित किया है। उसमें अंगिरा का नाम भी दर्शाया गया है। हम पहले बतला चुके हैं कि श्रृंगी ऋषि गौतम कुल में ही उत्पन्न हुए थे एवं गौतम के भाई थे ऊपर दर्शाया गया चार्ट एवं वर्णन स्व० ठा० प्रतापसिंह सेंगर द्वारा लिखित 'सेंगरों का इतिहास' से उद्धृत किया गया है। उन्होंने लिखा है कि कुश के वंशज आज के गौतम व सेंगर क्षत्रिय हैं एवं कुशवाहों व गहलौतों से बड़ी शाखा है।

स्वर्गीय श्री शिवनाथ सिंह सेंगर द्वारा रचित 'शिवनाथ भास्कर' दो भागों में क्षत्रिय राजवंशों की सूची व अन्य विवरण दिया हुआ है। निम्न चार्ट उसी से उद्धृत किया गया है।

क्रम सं०	वंश	राज्य या ठिकाने का नाम	उपाधि	भूमि या गाँव	जन संख्या	वार्षिक आय	वार्षिक कर	अन्य
118	गौतम	अर्गल जिला फतेहपुर उ०प्र०	राजा प्राचीन	2 शेष	—	—	—	—

उपरोक्त विवरण ब्रिटिश काल का है।

पृष्ठ 24 का शेष

'क्षत्रिय वंश प्रकाश में दी हुई राजवंशों की सूची और उनके ठिकाने

नाम राजवंश	कहाँ राज्य किया
1. सूर्यवंशी	अयोध्या में
2. चन्द्रवंशी	प्रतिष्ठानपुर में
3. यदुवंशी	द्वारिका में
4. सीसौदिया, गहलौत	मेवाड़ में
5. गौतम	अर्गल में (उ० प्र०)
6. तोमर	दिल्ली में
7. प्रमार	धारा नगरी (मालवा)
8. चौहान	अजमेर
9. सोलंकी	रोहितगढ़
10. परिहार	मंडोवर (उरई)
11. राठौर	कन्नौज
12. कछवाहे	नरवरगढ़
13. निकुम्भ	मण्डलगढ़
14. हैहयवंशी	चेदि में
15. चन्देल	महोबा, कालिंजर
16. नागवंशी	नागपुर
17. निमिवंशी	मिथला में
18. मौर्यवंशी	कश्मीर में
19. गोरखा	नेपाल
20. श्रीनेत	टेहरी गढ़वाल
21. द्रह्युवंशी	त्रिपुरा
22. भाटी	जैसलमेर
23. जाडेजा	कच्छ भुज
24. बघेल	रीवां

नाम राजवंश	कहाँ राज्य किया
25. चावड़ा	अनहिलपुर पाटन
26. गहरवार	कन्नौज
27. डोंड	रोहितासगढ़
28. गौड़	राजगढ़
29. बैस	प्रतिष्ठानपुर (बैसवाड़ा)
30. विसेन	मझौली
31. सेंगर	जगम्मनपुर
32. दीक्षित	दिखिताने में
33. झाला	सादड़ी में
34. गोहिल	खेड पाटन
35. कावा	थोहरगढ़
36. लोहथम्भ	लोहागढ़

पृष्ठ 27 का शेष

इतिहास शिरोमणि डॉ० राधाकुमुद मुखर्जी लिखते हैं कि जब कौशल के राजकुमार विदूड़भ ने शाक्य गणतन्त्र पर आक्रमण किया तो वहाँ की संसद ने यह निश्चय किया कि आक्रमणकारी का विरोध न किया जाय। फलतः निरीह शाक्यों का कत्लेआम हो गया। शाक्य सुसंस्कृत लोग थे। सम्भवतः उन्होंने सोचा होगा कि प्रतिरोध न करने पर विदूड़भ का क्रोध शान्त हो जायेगा और दोनों तरफ का नरसंहार बच जायेगा। परन्तु उसके विपरीत एकतरफा नर-संहार हुआ। इस नर-संहार का कारण यह था कि शाक्यवंशी महानाम क्षत्रिय की दासी पुत्री वासवदत्ता का विवाह छलपूर्वक कौशन नरेश प्रसेनजित से हुआ था। प्रसेनजित ने तो इस छल के प्रकट हो जाने पर भी किसी प्रकार के प्रतिशोध की भावना प्रकट नहीं की परन्तु प्रसेनजित के पुत्र विदूड़भ ने प्रतिक्रिया स्वरूप शाक्यों से माँग की कि वे अपनी कुलीन कन्या का विवाह उससे करें। शाक्यों ने उसका मखौल उड़ाया। जब विदूड़भ कौशल की गद्दी पर बैठा तो उसने शाक्यों पर आक्रमण किया। यद्यपि उसके इस नर-संहार का फल प्रकृति द्वारा उसे मिला।

वह एक बाढ़ में बहकर मृत्यु को प्राप्त हुआ तथा कौशल को जन-धन आदि की बड़ी क्षति उठानी पड़ी।

(डा० मदनमोहन सिंह रीडर प्राचीन भारतीय इतिहास, पटना विश्वविद्यालय) लिखते हैं कि

उस काल में शाक्य कुल क्षत्रियों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता था। शाक्य राजकुमारी का विवाह प्रसेनजित से उनकी प्रतिष्ठा के विपरीत था। भगवान बुद्ध के प्रति जन-साधारण की श्रद्धा का कारण यह भी था कि जिस कुल में उनका जन्म हुआ था वह अत्यन्त श्रेष्ठ माना जाता था।

—डा० मदनमोहन सिंह

शृङ्गवेरपुर—इलाहाबाद से 18 कि० मी० दूर रामचौरा रोड स्टेशन से 3 मील दूर शृंगवेरपुर है।

शुद्धि पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
9	9	कबीले से	कबीले का
13	5	महोतज	महातेज
13	7	अटल्या	अहल्या
14	9	श्रृंगी रिषिहि बुलावा	श्रृंगी रिषिहिं वशिष्ट बुलावा
15	8	एतानीक	सतानीक
15	13	गौतम से उस	गौतम ने उस
16	4	सो ब्राह्मण:	स ब्राह्मण:
23	4	उस काल से	उस काल में
23	19	सिरवेत	सिरनेत
25	27	Ikshwakee	Ikshwaku
26	11	नैणसी से ख्यात	नैणसी री खात
27	26	शुक्रगत	शतशुक्र
28	1	आज	अज
31	14	वीरसेन से	वीरसेन ने
32	22	लगभग परिवारों	लगभग पचास परिवारों
38	25	उलुग खांने आजम (बलवन) से	उलुग खाने आजम (बलवन) ने
39	2	तलसंदा (तलखड़ा)	तलसंदा (तलसड़ा)
39	16	याज्ञवल्का	याज्ञवल्क
44	27	Standing	Stating
45	29	वरसी	वरनी
50	21	अंशुकान	अंशुमान
50	23	रौदास	सौदास
51	9	शुद्धोधत	शुद्धोधन
51	16	में सेर खा था	में से एक था
51	27	जनपद से	जनपद में
52	नाम सं० 27	शत्रुदित	शत्रुजित
58	24	हिम्मत सिंह ताल्लुका	हिम्मत सिंह को ताल्लुका
62	5	विजगाँव कुवर	विजय कुँवर
6	26	रकजुहा	खजुहा

पृष्ठ	पंक्ति	शुद्ध	अशुद्ध
65	14	भावी	भाधी
70	20	सखियों के	सखियों में
75	18	अब होगी	अब शै होगी
76	18	सुना दी	मुनादी
79	2	ऐरा	ऐसा

(पृष्ठ संख्या 56 वंशावली संख्या 56 के सन्दर्भ में देखें)

फतेहपुर जिला गजेटियर में एच० पी० हेवेट लिखते हैं कि–Non among the higher castes ordernarely admit the inrolment of an out sider. There are, however, instances of exceptions to this rule in the numerous Brahamans, co-opted into the caste through the influcnee of the Rajas of Argal, when they were at the height of their power. Their are five different families of Brahmans made so by the Rajas of Argal. The last known instance of a Brahman so made in the last century.

(कोई भी हिन्दू जाति अपने से भिन्न प्रजाति को अपने में सम्मिलित नहीं करती। परन्तु इसके अपवाद भी हैं। अर्गल नरेशों ने जब वे अपने उत्कर्ष में थे तो पाँच हिन्दू प्रजातियों को ब्राह्मण बनाया था। इस प्रकार को ज्ञात घटना पिछली शताब्दी में हुई थी।

पृष्ट संख्या 12 पंक्ति 22 के बाद पढ़ा जाय

अहानि ग्रध्राः पर्या व आगुरिमा धियें वाकांययी चं देवीम्।

ब्रह्मं करावंतो गौतंमाशो अर्वो रूध्वंनु नुद्र उत्संधि पिबध्ये ॥ 4 ॥

एतहयन्न योजनमचेति सस्वर्हं यन्मंरूतो गौतमो वः।

पश्यन हिरण्य चक्रान योदष्ट्रान्विधावतों वराहून ॥ 5 ॥

श्रृं० पे० मं० अ० 13 से 75

पृष्ट 25 के अन्त में पढ़ा जाय

जनरल कनिंघम ने अपनी पुस्तक 'Ancient Geog. of India में जो सन् 1871 में प्रथम बार प्रकाशित हुई थी एवं 1979 में द्वितीय संस्करण छपा के पृ० 348 से 352 में प्रतिपादित किया है कि भगवान बुद्ध गौतम क्षत्रिय थे।